

Philemon

फिलेमोन

¹Greetings from Paul, a prisoner for Jesus Christ, and from Timothy, our brother.

To Philemon, our dear friend and worker with us. ²Also to our sister Apphia, to Archippus, who serves with us in the Lord's army, and to the church that meets in your home.

³Grace and peace to you from God our Father and the Lord Jesus Christ.

Philemon's Love and Faith

⁴I remember you in my prayers. And I always thank my God for you. ⁵I thank God because I hear about the love you have for all of God's holy people and the faith you have in the Lord Jesus. ⁶I pray that the faith you share will make you understand every blessing we have in Christ. ⁷My brother, you have shown love to God's people, and your help has greatly encouraged them. What a great joy and encouragement that has been to me.

Accept Onesimus as a Brother

⁸There is something that you should do. And because of the authority I have in Christ, I feel free to command you to do it. ⁹But I am not commanding you; I am asking you to do it out of love. I, Paul, am an old man now, and I am a prisoner for Christ Jesus. ¹⁰I am asking you for my son Onesimus. He became my son while I was in prison. ¹¹In the past he was useless to you. But now he has become useful for both you and me.

¹²I am sending him back to you, but it's as hard as losing part of myself. ¹³I would like to keep him here to help me while I am still in prison for telling the Good News. By helping me here, he would be representing you. ¹⁴But I did not want to do anything without asking you first. Then whatever you do for me will be what you want to do, not what I forced you to do.

¹यीशु मसीह के लिए बंदी बने पौलुस तथा हमारे भाई तीमुथियुस की ओर से:

हमारे प्रिय मित्र और सहकर्मी फिलेमोन, ²हमारी बहन अफफिया, हमारे साथी सैनिक अरखिप्पुस तथा तुम्हारे घर पर एकत्रित होने वाली कलीसिया को:

³हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

फिलेमोन का प्रेम और विश्वास

⁴अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारा उल्लेख करते हुए मैं सदा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। ⁵क्योंकि मैं संत जनों के प्रति तुम्हारे प्रेम और यीशु मसीह में तुम्हारे विश्वास के विषय में सुनता रहता हूँ। ⁶मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारे विश्वास से उत्पन्न उदार सहभागिता लोगों का मार्ग दर्शन करे। जिससे उन्हें उन सभी उत्तम वस्तुओं का ज्ञान हो जाये जो मसीह के उद्देश्य को आगे बढ़ाने में हमारे बीच घटित हो रही हैं। ⁷हे भाई, तेरे प्रयत्नों से संत जनों के हृदय हरे-भरे हो गये हैं, इसलिए तेरे प्रेम से मुझे बहुत आनन्द मिला है।

उनेसिमस को भाई स्वीकारो

⁸इसलिए कि मसीह में मुझे तुम्हारे कर्तव्यों के लिए आदेश देने का अधिकार है ⁹किन्तु प्रेम के आधार पर मैं तुमसे निवेदन करना ही ठीक समझता हूँ। मैं पौलुस जो अब बूढ़ा हो चला है और मसीह यीशु के लिए अब बंदी भी बना हुआ है, ¹⁰उस उनेसिमस के बारे में निवेदन कर रहा हूँ जो तब मेरा धर्मपुत्र बना था, जब मैं बन्दीगृह में था। ¹¹एक समय था जब वह तेरे किसी काम का नहीं था, किन्तु अब न केवल तेरे लिए बल्कि मेरे लिए भी वह बहुत काम का है।

¹²मैं उसे फिर तेरे पास भेज रहा हूँ (बल्कि मुझे तो कहना चाहिए अपने हृदय को ही तेरे पास भेज रहा हूँ।) ¹³मैं उसे यहाँ अपने पास ही रखना चाहता था, तकि सुसमाचार के लिए मुझ बंदी की वह तेरी ओर से सेवा कर सके। ¹⁴किन्तु तेरी अनुमति के बिना मैं कुछ भी करना नहीं चाहता ताकि तेरा कोई उत्तम कर्म किसी विवशता से नहीं बल्कि स्वयं अपनी इच्छा से ही हो।

¹⁵ Onesimus was separated from you for a short time. Maybe that happened so that you could have him back forever, ¹⁶ not to be just a slave, but better than a slave, to be a dear brother. That's what he is to me. And I know he will mean even more to you, both as your slave and as one who shares your faith in the Lord.

¹⁷ If you accept me as your friend, then accept Onesimus back. Welcome him like you would welcome me. ¹⁸ If he has done any wrong to you or owes you anything, charge that to me. ¹⁹ I, Paul, am writing this in my own handwriting: I will pay back anything Onesimus owes. And I will say nothing about what you owe me for your own life. ²⁰ So, my brother, as a follower of the Lord please do this favor for me. It would be such a great encouragement to me as your brother in Christ. ²¹ I write this letter knowing that you will do what I ask, and even more than I ask.

²² Also, please prepare a room for me. I hope that God will answer your prayers and that I will be able to come and see you.

Final Greetings

²³ Epaphras is a prisoner with me for Christ Jesus. He sends you his greetings. ²⁴ Also Mark, Aristarchus, Demas, and Luke send their greetings. They are workers together with me.

²⁵ The grace of our Lord Jesus Christ be with your spirit.

¹⁵ हो सकता है कि उसे थोड़े समय के लिए तुझसे दूर करने का कारण यही हो कि तू उसे फिर सदा के लिए पा ले। ¹⁶ दास के रूप में नहीं, बल्कि दास से अधिक एक प्रिय बन्धु के रूप में। मैं उससे बहुत प्रेम करता हूँ किन्तु तू उसे और अधिक प्रेम करेगा। केवल एक मनुष्य के रूप में ही नहीं बल्कि प्रभु में स्थित एक बन्धु के रूप में भी।

¹⁷ सो यदि तू मुझे अपने साझीदार के रूप में समझता है तो उसे भी मेरी तरह ही समझ। ¹⁸ और यदि उसने तेरा कुछ बुरा किया है या उसे तेरा कुछ देना है तो उसे मेरे खाते में डाल दे। ¹⁹ मैं पौलुस स्वयं अपने हस्ताक्षरों से यह लिख रहा हूँ। उसकी भरपाई तुझे मैं करूँगा। (मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि तू तो अपने जीवन तक के लिए मेरा ऋणी है।) ²⁰ हाँ भाई, मुझे तुझसे यीशु मसीह में यह लाभ प्राप्त हो कि मेरे हृदय को चैन मिले। ²¹ तुझ पर विश्वास रखते हुए यह पत्र मैं तुझे लिख रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि तुझसे मैं जितना कह रहा हूँ, तू उससे कहीं अधिक करेगा।

²² मेरे लिए निवास का प्रबन्ध करते रहना क्योंकि मेरा विश्वास है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के परिणामस्वरूप मुझे सुरक्षित रूप से तुम्हें सौंप दिया जायेगा।

पत्र का समापन

²³ यीशु मसीह में स्थित मेरे साथी बंदी इपफ्रास का तुम्हें नमस्कार। ²⁴ मेरे साथी कार्यकर्ता, मरकुस, अरिस्तर्खुस, देमास और लूका का तुम्हें नमस्कार पहुँचे।

²⁵ तुम सब पर प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह बना रहे।